दस लाख का सवाल

सुबह से ही बॉस का मूड बिगड़ा हुआ था। वजह मालूम नही पड़ रही थी। मैं वर्षा पाटिल, मुम्बई में एक कम्पनी में सेक्रेटरी का काम करती हूँ। मेरे बॉस, राहुल अरोड़ा, एक पन्जाबी परिवार से हैं जिनका काम गवर्नमेन्ट के ठेके लेना है। टेन्डर के द्वारा सरकार परचेज़ करती है और मेरे बॉस आफ़िसरों को पैसे खिला पिला कर अपना काम निकलवाते हैं। उनका दिल्ली बेस होना उनके काम में बड़ी सहायता करता है। ज्यादातर कान्ट्रैक्ट दिल्ली से पास होते है और दिल्ली में ही आफ़िसरों को खुश करने के लिये शराब, कबाब और शबाब का मज़ा लूटने देते हैं।

"सर, क्या बात है आज आप बड़े परेशान दिखाई पड़ रहे हैं?" मैंने केबिन में घुसते ही पूछ लिया।

"हां वर्षा, आज कुछ ज्यादा ही परेशान हूँ," बॉस ने बड़े गम्भीर होते हुए कहा, "किसी ने हमारी कम्पनी की शिकायत दिल्ली में कर दी है।"

"किस चीज़ की शिकयात, बॉस?" मैंने चेयर पर बैठते हुए कहा।

"एक ठेके के बारे में, वर्षा। और उसी सिलसिले में एक बड़ा सरकारी आफ़िसर माल चेक करने आ रहा है," बॉस परेशानी की हालत में बोल रहे थे। "अब अगर हमारा माल रिजेक्ट कर दिया तो बड़ा नुकसान होग कम्पनी को।"

"हां। लेकिन आफ़िसर को पटा क्यों नहीं लेते हैं सर। आप तो उन लोगो को पटाने में माहिर भी है," मैंने हँसते हुए कहा।

"नहीं वर्षा। ये आफ़िसर बड़ा रंगीन मिज़ाज़ है। और लोगों को तो बज़ार की रेडीमेड चीज़ों से पटा लेता हूँ। लेकिन ये आफ़िसर... मालूम नही... क्यों घरेलु चीज़ें ही पसंद करता है," बॉस परेशनी की

हालत में बोले।

"घरेलु चीज़ें? मतलब?" मुझे कुछ समझ में नही आया।

"घरेलु यानि घरेलु। अरे बड़ा रंगीन मिज़ाज़ है। उसे बज़ार की औरतें नही बल्कि घरेलु औरतें चाहिये। अब यह सब कहां से लाऊं मैं," बॉस ने समझाते हुए कहा।

अब समझ में आया। बाज़ार की औरतें नहीं... यानि वेश्या नहीं... घर की औरतें चाहिये हम–बिस्तर होने के लिये। यानि पुरा रंगीन मिज़ाज़ था आफ़िसर। यूं तो बॉस ऐसी बातें मुझसे नही करता लेकिन आज परेशानी में वह खुलकर बोल पड़ा। फिर हम दोनों सोच में डूब गये इस समस्या को सुलझाने के लिये। मुझे अपनी सहेली की याद आ गयी। रोहिणी, एक खूबसुरत एयर होस्टेस है। हम दोनों एक साल पहले तक साथ–साथ रहते थे। वह इन चीज़ों में माहिर थी। उसका कहना था कि, ज़िन्दगी बड़ी छोटी है। अपनी खूबसुरती का इस्तमाल करो और रुपया बनाओ। वो अपने जिस्म का फ़ायदा उठा कर बड़े–बड़े लोगों से मिलती और एक–दो महिने में लाखों कमा कर दुसरे को ढुंढने लगती। उसका कहना था कि इन ७–८ सालों में इतना कमा लो कि बाकी ज़िन्दगी बगैर कोइ काम करे गुज़ार सको। वो हमेशा मुझे भी यही सलाह देती थी।

मुझे हमेशा कहती थी, "वर्षा तु तो मुझसे भी खूबसुरत है। कहां सेक्रेटरी की नौकरी में पड़ी है। मेरी लाईन पर चल, लाखों कमयेगी। फिर ७–८ साल बाद हम दोनों किसी छोटे शहर में एक छोटे से मकान में अपनी बाकी की ज़िन्दगी ऐश से गुजरेंगे।" लेकिन मैं अपने बॉय–फ्रैंड के साथ खुश थी और थोड़ी बहुत फ्लरटिंग अपने बॉस के साथ भी कर लेती थी। जिससे बॉस भी थोड़ा बहुत मुझसे खुला हुआ था।

यह सोचते–सोचते मैंने अपने बॉस से कहा, "अगर कोइ लड़की मिले भी तो वो कोइ मामुली नही बल्कि कोइ एक खूबसूरत ही नही बल्कि बला की खूबसूरत चाहिये। उसे क्या मिलेगा जो ये काम करे।"

बॉस ने समझाते हुए कहा, "वर्षा, यह कान्ट्रैक्ट जो की १० करोड़ का है। अगर कैन्सल हो जायेगा तो कम्पनी को २–३ करोड़ का नुक्सान जरूर हो जायेगा। मैं तो इससे बचने के लिये १० करोड़ का १% कमिशन १० लाख तक देने को तैयार हूँ।"

"१० लाख रुपये!!!" मेरा मुँह ये कहते हुए खुला ही रह गया। यह रकम कोइ छोटी नही होती किसी भी लड़की के लिये। कोइ भी तैयार हो जाये। तभी मेरे मन में और एक विचार आने लगा। और यह रकम मुझे मिल जाये तो.... फिर अपने बॉस से कहा, "सर, मैं एक लड़की को जानती हूँ।"

बॉस ने उत्सुकता से कहा, "कौन है वो। कोइ चालु लड़की नही चहिये।"

मैंने कहा, "वो एक एयर–होस्टेस है।"

बॉस ने फिर पुछा, "क्य वो रेडी हो जायेगी?"

"कोशिश करती हूँ," मैंने जवाब दिया।

"सोच लो वर्षा। अगर अभी रेडी हो गयी और टाईम पर ना बोल दी तो कहीं लेने के देने न पड़ जायें। फिर तुम जानती हो। एक बार कान्ट्रक्ट कैन्सल हुआ तो कितना बड़ा नुकसान हो जायेगा।" बॉस ने जोर देते हुए कहा। फिर न जाने मेरे मुंह से कैसे निकल गया, "सर, आप परेशान नही होयें। मैं मैनेज कर लूँगी।" बॉस मुझे देखते ही रह गये।

मैंने अपने घर पहुंच कर अपनी फ्रेन्ड, रोहिणी, के मोबाईल पर फोन किया।
"क्या हाल है रोहिणी? मुम्बई में हो या कहीं और..." मैंने फोने लगाते ही पुछा।

"वर्षा। व्हॉट ए ग्रेट सरप्राइज़! मुम्बई से ही बोल रही हूँ यार। बता क्या हाल–चाल है," रोहिणी ने पुछा।

"बस कुछ नही। तू आज कल किसके साथ गुलछर्रे उड़ा रही है?" मैंने हंसते हुए कहा।

"कहां यार। अभी तो कोइ मुर्गा ही ढुंढ रही हूँ? तु भी क्या अभी सेक्रेटरी बनी हुई है या मेरे जैसी बन गयी," रोहिणी बोली।

"तेरी तरह बन जाऊं? चल जा हट। लेकिन तेरे लिये जरूर एक काम है । खूब पैसे मिलेंगे।"

"कोइ मुर्गा मिला है क्या?" रोहिणी ने पुछा। तब मैंने उसे सारी बात बतायी। और उसे साथ देने के लिये ५०–५० का ऑफ़र किया। जिसे वो मान गयी।

फ्राईडे की दोपहर आफ़िसर, मिस्टर लोहाणे, दिल्ली से आया। एक होटल में एक सुईट की व्यवस्था कर दी गयी उसके लिये। आफ़िस में आकर माल को देखा। तमाम तरह के प्रश्न करने लगा। मेरा बॉस परेशान हो गया। उसने मेरी तरफ़ उम्मीद की नज़रों से देखा। मैंने अब अपनी पोजिशन सम्भाल ली। अपने हसीन जिस्म का फ़ायदा उठाने लगी। आफ़िसर के नज़दीक आ कर उसे हर बात का जवाब देने लगी। लो–कट ड्रैस में से मेरे झलकते हुस्न ने उसके प्रश्नों को कम कर दिया। उसकी दिलचस्पी अब सवालों में नही बल्कि मेरे नज़दीक आने में होने लगी। मैं भी एक घरेलु टाईप की लड़की का रोल अदा करते हुए उससे दूर रहने की कोशिश करती और फिर थोड़ी देर में अनजान

बनती हुई उसके एकदम करीब आ जाती। आफ़िसर एकदम बेचैन हो उठा। फिर मेरे बॉस से कहा, "राहुल। माल तो तुम्हारा ठीक है लेकिन तीन–चार फोरमैलिटीज़ करनी पड़ेगी।" यानी तीर एकदम निशाने पर बैठा। अब उसे पिघलने में ज्यादा देर नही थी।

मेरे बॉस ने कहा, "सर, आपकी हर जरूरत पूरी की जायेगी। आप १–२ फोरमैलिटीज़ अभी पुरी कर लिजिये बाकी शाम के समय मैं होटल आकर पुरी कर देता हूँ।"

"ठीक है। वैसे तुम्हरी सेक्रेटरी बड़ी इंटैलिजैंट है। तुम्हारा बिज़नेस बड़ा ही ग्रो करेगा," आफ़िसर मेरे जिस्म को घुरता हुआ बोला। अब बॉस के लिये समस्या खड़ी हो गयी। आफ़िसर मिस्टर लोहाणे का इरादा समझ में आ रहा था। बॉस राहुल ने मुझसे कहा, "अब क्या करें?"

मैंने हंसते हुए जवाब दिया, "नो प्रॉब्लम बॉस, मैं सब सम्भाल लूंगी।" आखिर १० लाख का सवाल था। शाम के बजाय आठ बज़े हम लोग यानी मैं और मेरा बॉस राहुल होटल में पहुंचे। उसके पहले मैंने रोहिणी से बात कर ली थी। वो रात के करीबन १० बज़े वहां पहुँचने वाली थी। उस शाम के लिये मैंने भरपुर तैयारी कर ली। अपने बदन को अच्छी तरह से वैक्सिंग कर के और भरपुर मेक–अप कर अपने उपर तीन–चार ड्रैस की रीहर्सल करने के बाद शॉर्ट स्कर्ट और हाई हील सैंडल्स के उपर बस्टीयर और ओपन–जैकेट डाल मैं एकदम तैयार थी। १० लाख कमाने के लिये। जिसमे ५ लाख मेरे लिये होंगे। और मेरा बॉस स्कॉच की ३–४ वैराइटी लिये तैयार था।

जैसे ही हम सुइट के अन्दर घुसे आफ़िसर मिस्टर लोहाणे मुझे देखते ही पंक्चर हो गया। उसकी आंखें मेरे जिस्म से चिपक गयी। मेरी गोरी– गोरी चिकनी जांघें, लम्बी टांगें उसके बदन में तूफ़ान ला रही थीं। टाईट स्कर्ट से चिपके हुए मेरे चूतड़ों से उसकी नज़रें चिपकी हुई थी। ओपन–जैकेट से झलकते हुए मेरे बस्टीयर में दबे मेरे मम्मे दबोचने के लिये उसे आमन्त्रण दे रहे थे। फेशियल से तरो ताज़ा मेरे गाल और हल्के रोज़ रंग की लिपस्टिक से रंगे हुए मेरे नाज़ूक होंठ उसे गुलाब की

पंखुड़ियां लग रही थीं। वह मेरा यह रूप देख अपने सुखे हुए होंठों को गीला करते हुए बोला, "मिस्टर राहुल क्या यही सेक्रेटरी दोपहर में तुम्हारी आफ़िस में थी?"

बॉस खुश होते हुए बोला, "पहले आफ़िस टाईम था अभी ये रिलेक्स टाईम है। चेन्ज तो होना ही है मिस्टर लोहाणे।"

लोहाणे ने मुझे अपने हाथों से खींच कर एक चेयर पर मुझे बैठाया और सामने वाली चेयर पर खुद बैठ गया। मेरे बॉस को अपनी चेयर खुद ही खींच कर बैठना पड़ा। मेरी खूबसूरती का जादू चल चुका था। तभी बॉस ने बात की शुरुआत की, "तो मिस्टर लोहाणे, हमारा माल कैसा लगा?" बॉस का मतलब आफ़िस के माल से था। मगर लोहाणे इसे मेरे बारे में समझा। उसने कहा, "मिस्टर राहुल। बहुत ही खूबसूरत। मानो स्वर्ग से एक अपसरा अभी–अभी उतरी है।" मैंने शरमा कर अपनी नज़रें झुका ली। लोहाणे का मतलब समझते हुए बॉस ने कहा, "मेरा मतलब कान्ट्रैक्ट के माल से था, मिस्टर लोहाणे।"

लोहाणे ने मेरे जिस्म से अपनी नज़र को न हटाते हुए कहा, "छोड़ो उस माल को यार, बात अभी की करो। वो वाला भी परफ़ेक्ट और ये वाला भी...." ये सुन कर बॉस झूम उठा।

मैंने भी खड़े होते हुए कहा, "रियली! तब तो हमें इस बात की पार्टी रात भर मनानी चाहिये।" ये सुनकर बॉस ने एक फोन होटल रिसेप्शन पर मिलाया और सोडा और कुछ स्नैक्स का आर्डर दे दिया। हम लोग बातें करने लगे। थोड़ी देर में ही वेटर ने आकर आर्डर वाली सब चीज़ें ला कर टेबल पर रख दीं। मैंने रूम में रखे फ्रिज में से आईस निकाल तीन ग्लास में स्कॉच, सोडा और आईस डाल कर पार्टी के शुरु होने का एलान कर दिया। चीयर्स करते हुए बॉस बोला, "आज के इस कान्ट्रैक्ट की सफ़लता के लिये चीयर्स।" लोहाणे ने कहा, "मिस वर्षा के इस बेपनाह हुस्न के लिये चीयर्स।" और मैंने कहा, "आज की इस खुबसुरत पार्टी के लिये चीयर्स।" और हम सब अपनी

ग्लासों को टकरा के पीने लगे। आधे घन्टे तक हम अपनी सीट पर बैठे जाम से जाम टकराते रहे। लोहाणे मेरे सामने बैठा मेरे जिस्म का स्वाद अपनी नज़रों से ले रहा था। मेरे शॉर्ट–स्कर्ट से झांकती मेरी मांसल जांघों को जी भर के देख रहा था। मैंने भी गौर किया कि लोहाणे के पैंट में एक उभार पैदा हो रहा था। उसकी पैंट चैन के पास से टाईट हो रही थी। अपने मचलते हुए खिलौने को लोहाणे बीच–बीच में एडजस्ट भी कर रहा था। लेकिन उसकी कोशिश असफ़ल हो रही थी। जितना एडजस्ट करता उतना ही उसका खिलौना और मचल रहा था। मैं एक पेग के बाद जब दूसरा आधा पेग ले रही थी तब तक बॉस और लोहाणे ३–३ पेग पी चुके थे। मैं इन्तज़ार कर रही थी अपनी फ्रेन्ड रोहिणी का। वह आये और हमारा काम हो जाये। मैंने कभी भी एक पेग से ज्यादा नही पिया था। इसलिये स्कॉच का नशा पूरा चढ़ा हुआ था। जबकी बॉस और लोहाणे स्कॉच के नशे में अब बहकने लगे। उनके आपस में कही जा रही बातों में तीन–चार गालियां साथ–साथ आ रही थीं। मैं उनके ग्लास को खाली होते देख दूसरी बोतल से उनके ग्लास रिफ़िल करने लगी। तब लोहाणे ने खड़े हो कर मुझे अपनी एक बांह से पकड़ लिया और कहा, "जानेमन तुम तो कुछ भी नही ले रही हो। लो ये पीस खाओ। बड़ा ही टेस्टी है।" और यह कहकर मेरे मुंह में स्नैक्स का एक पीस ठूँसने लगा। फिर स्कॉच के नशे में वापस बोला, "अरे केचप लगाना तो भूल ही गया। इसे केचप के साथ खाओ।" यह कहकर मेरे मुंह में ठूँसे हुए स्नैक्स के उपर सीधे केचप की बोतल से केचप लगाने लगा। और वह केचप सारा का सारा मेरी जैकेट और बस्टीयर पर जा गिरा। लोहाणे शर्म से झेंप पड़ा और कहने लगा, "ओह, आई एम वेरी सॉरी.. वेरी सॉरी," और अपनी रुमाल निकाल कर साफ़ करने की कोशिश करने लगा, "प्लीज़.. प्लीज़ मुझे साफ़ करने दिजिये।"

मैंने कहा, "ओह। कोइ बात नही। मैं खुद साफ़ कर लूंगी।" एक खूबसुरत लड़की के कपड़ों पर ऐसा हो जाये तो स्वाभाविक है की कोइ भी आदमी परेशान हो ही जाता है। मैं टेबल पर पड़े पेपर नैपकिन्स से केचप को साफ़ करने लगी। लेकिन वो कहाँ से साफ़ होता। मैं थोड़ा अपसेट हो गयी। और मेरा बॉस भी थोड़ा अपसेट हो चुका था। लेकिन लोहाणे अपनी सूटकेस खोलने लगा। एक पार्सल को निकलते हुए कहा, "मैं अपनी फ्रेन्ड के लिये कुछ कपड़े लाया था। शायद आप के काम

आ जाये। प्लीज़ देख लिजिये।" मैंने भी कोइ और चारा नही देख कर उससे वह पैकेट ले लिया और बाथरूम में घुस गयी। वाशबेसिन में अपने कपड़े साफ़ किये और पैकेट को खोल कर कपड़े देखने लगी। ये कपड़े कहां थे। ये तो नाईटीज़ थी। वह भी मिनि नाईटीज़। अब मैं अपने कपड़े साफ़ करने के चक्कर में काफ़ी गिली कर चुकी थी। और कोई चारा नही था मेरे पास। तीन नाईटीज़ में से मैंने एक नाईटी चूज़ की। बाकी दोनों नाईटीज़ पहने या नही कोइ मतलब ही नही था। केवल पहनना था छुपाने के लिये कुछ भी नही था। यह वाली नाईटी टार्ज़न स्टाईल की क्रोस स्टाईल का टाप और स्कर्ट था जिसे पहनने के बाद टाप को मुझे वापस खोलना पड़ा। क्योंकि मेरी ब्रा के स्ट्रैप्स अलग से दिखाइ दे रहे थे। जब मैंने अपनी ब्रा उतार कर वह टाप पहना तो मेरे निपल्स उस टाप से झलकने लगे। मेरे मम्मे तो साफ़ साफ़ दिखाई पड़ ही रहे थे। लेकिन कोई उपाय नही बचा था और स्कॉच के नशे ने मेरी हिम्मत भी बढ़ा दी। फिर मेरी फ्रेन्ड भी थोड़ी देर में आने वली थी।

मैं जैसे ही बाथरूम से बाहर आयी तो लोहाणे और बॉस का मुंह खुला का खुला रह गया। दोनों की नज़रें मेरी नाईटी को चीरती हुई मेरे दिखाई पड़ रहे जादुई जिस्म को घूर रही थी। उनके मुंह से आहहह एक साथ निकल पड़ी। लोहाणे का एक हाथ अपनी पैंट पर फौरन जा पड़ा। अपने हाथियार को एडजस्ट करने के लिये। मैं आगे बढ़ी मेरी नज़रें झुकी हुई थी। दोनों मेरे डगमगाते हुए एक–एक कदम पर अपनी आहें भर रहे थे। मेरा बॉस तो अब एकदम धस से अपनी चेयर पर बैठ गया। लोहाणे ने अपनी ग्लास सम्भाले मेरे ग्लास को मेरे हाथों में थमा दिया और लम्बे–लम्बे घूँट भरने लगा। तभी मेरे डोर को नॉक करने की आवाज़ आयी। मेरी जान में जान आ गयी। लोहाणे ने आगे बढ़ कर दरवाज़ा खोला और सामने पाया एक और बला की हसीन लड़की को। वह उसे देखकर कुछ हैरान हो गया। उसने अन्दर की ओर देखा।

तभी मैंने कहा, "हाय रोहिणी वेलकम"

रोहिणी ने भी कहा, "हाय एवरीबडी"

लोहाणे बोला, "अच्छा यह आप की परिचित है।"

तब मैंने कहा, "हां। इस पार्टी को दिलखुश बनाने के लिये ही मैंने अपनी फ्रेन्ड रोहिणी को इनवाईट किया है।"

फिर रोहिणी से सबका परिचय कराया, "रोहिणी, मीट हिम... अवर गेस्ट... मिस्टर लोहाणे और आप हैं मेरे बॉस मिस्टर राहुल।"

रोहिणी ने दोनों से हाथ मिलाया और मैंने उसके लिये एक पेग बनाया। उसके लिये ही क्यों बल्कि हमारे तीनों के पेग वापस फ़िल करके चीयर्स किया। रोहिणी अपने साथ म्युज़िक सिस्टम लायी थी। उसे साईड टेबल पर रख कर उसे साकेट में लगा कर ऑन भी कर दिया। फिर अपना ओवरकोट उतारने लगी। पुरी तैयारी के साथ आयी थी। ओवरकोट उतारने के साथ रूम में अब दो-दो बिज़लियां चमकने लगीं। एक बिज़ली मेरे रूप में चमक ही रही थी। अब दूसरी बिज़ली दोनों नशे में चूर मरदों को झटका देनेके लिये तैयार थी। रोहिणी चोली नुमा टॉप, लाँग स्कर्ट और बहुत ही हाई हील्स के सैंडल्स पहने हुए थी। उसका लाँग स्कर्ट एक साईड से कमर तक कट था जिससे उसका जिस्म एक साईड से पुरा नंगा दिखाइ पड़ रहा था। केवल डोरी से ही वह ढका हुआ था। उसने देर न करते हुए म्युज़िक सिस्टम का वॉल्युम बढ़ा दिया और रूम की केवल एक लाईट को चालु रहने दिया। साथ ही वो डांस करने लगी। लोहाणे बेड पर बैठ गया और बॉस ने बीच में जगह बनाने के लिये चेयर्स को साईड में कर दिया और खुद एक चेयर पर बैठ गया। मेरे लिये कोइ चेयर नही होने पर मैं बेड पर लोहाणे के पास बैठ गयी। अब हम तीनों नशे में चूर थे जबकी रोहिणी शायद पहले से ही पी कर आयी थी। उसने अपनी ग्लास पुरी खतम कर के उसे बेड के नीचे ठेल दिया।

रोहिणी का डांस काबिले तारिफ़ था। उसकी हर अदा उन दोनों मर्दों की ही सांसे उपर–नीचे नही कर रही थी बल्कि मुझे भी मस्त कर रही थी। लोहाणे ने मुझे अपनी बाहों में भींच लिया जिसका मैंने कोइ विरोध नही किया। लम्बा लेट कर वह रोहिणी के डांस का मज़ा लेने लगा। मैं भी उसके पहलू में आधी लेटी हुई डांस का आनंद उठा रही थी। बॉस धीरे–धीरे चुस्की लेते हुए रोहिणी की हर थिरकते कदम का गर्दन नचा कर जवाब दे रहा था। तभी लोहाणे मेरी जांघों को अपने हाथ से सहलाने लगा। जिससे मेरे बदन में एक गुदगुदी होने लगी। मैं और उसके बदन से चिपक गयी। उसका लंड पैंट में से मेरे चुतड़ को दस्तक दे रहा था। मैं उसके कड़ेपन का एहसस अपने चुतड़ों पर कर रही थी। रोहिणी ने अब बॉस की चेयर के सामने आकर अपनी चोली में छिपे मम्मो को उसके चेहरे के सामने नचाने लगी। साईड ऐन्गल से हमे वह दिखाइ पड़ रहा था। बॉस की सांसें और उपर–नीचे होने लगी। रोहिणी ने बॉस का हाथ पकड़ा और अपने गालों से लगाया, फिर अपने मम्मो के उपर फ़िसलाया और उसकी गोद में बैठ कर घुम गयी। इधर लोहाणे का हाथ मेरी जांघों से बढ़ कर मेरे पेट को सहलाता हुआ मेरे मम्मो को नाईटी के उपर से सहलाना शुरु कर दिया। मेरे मम्मो को धीरे–धीरे सहलने लगा और मेरे चेहरे को उपर कर मेरे होठों को चुम लिया। मेरी आंखें उसके चुम्बन से बन्द होने लगीं। उसने मेरी दोनों कलियों का रस पीना शुरु कर दिया। तभी रोहिणी ने मेरे बॉस की शर्ट उतार दी और अपनी चोली भी। अब उसके बड़े साईज़ के मम्मे बॉस के सीने से टकरा रहे थे। फिर वहां से निकल कर वह हमारे सामने आ गयी और लोहाणे के कान को अपने दांतों से हल्के–हल्के काटने लगी। मेरे दोनों हाथों को पकड़ कर मेरी दोनों हथेलिओं को अपने मम्मों पर रख लिया।

उफ़्फ़ क्या मन्ज़र था। उसके मम्मों की नाज़ुक त्वचा पे मेरी कोमल हथेलिआं फिसल रही थीं। रोहिणी ने अपना हाथ बढ़ाकर लोहाणे की पैंट पर रख दिया और उसके मतवाले लंड को पैंट के उपर से छेड़ने लगी। लोहाणे के मुंह से सिस्कारी निकल पड़ी। लोहाणे अपने दोनों हाथों को मेरी हथेली के उपर रख रोहिणी के मम्मों को जोर–जोर से रगड़ने लगा। रोहिणी ने एक

झटके में उसकी पैंट की ज़िप्पर को नीचे खींच दिया और अन्डर्वेयर में से उसके लंड को बाहर खींच लिया। उसका लम्बा मोटा लंड उछलता हुआ बाहर आ गया। मेरी सांसें उपर नीचे होने लगीं। लंड की फोर–स्किन को रोहिणी ने आगे पीछे किया और मुझे वहां से उठा कर अपने साथ खींचती हुई फिर से मेरे साथ नाचने लगी। लोहाणे तो उसके हाथ के सहलाने से पागल हो गया। और उसने अपने बाकी कपड़े उतार बेड पर नंगा हो गया।

रोहिणी ने अपने मम्मों को मेरे मम्मों से रगड़ना चालु किया फिर मेरी नाईटी के दोनों कपड़े उतार फेंके। अब उसने अपना स्कर्ट निकाला और मेरे नंगे बदन से अपना नंगा बदन चिपका लिया। अब हम दोनों सिर्फ अपने हाई हील सैंडल्स पहने हुए बिल्कुल नंगी नाच रही थीं। मेरा चुतड़ लोहाणे के सामने और रोहिणी का चुतड़ बॉस के सामने था। दोनों के चुतड़ थिरक रहे थे। दोनों मर्द अपने होशो–हवास खो रहे थे। फिर मैंने रोहिणी के निपलों से अपने निपलों को रगड़ना चालु कर दिया। हम दोनों घुम घुम कर रगड़ रहे थे।

तब रोहिणी ने मुझे कारपेट पर लेटा कर मेरे होठों को अपने होठों में दबाते हुए अपनी जांघों को मेरी जांघों के उपर उछालने लगी। मानो वो मुझे चोद रही हो। दोनों मर्द इस हरकत पर तड़प रहे थे। तड़पते क्यों नही। उनकी जगह रोहिणी जो ले रही थी। बॉस से अब नही रहा गया। उसने उठकर अपनी पैंट और अन्डर्वेयर खोली और अपना लंड रोहिणी के गालों से सहलाना शुरु कर दिया। यह देखकर लोहाणे भी उठा और सीधे रोहिणी के चुतड़ को चुमने लगा। रोहिणी ने थोड़ा उपर खिसकते हुए बॉस का लंड अपने मुंह में ले लिया तो मेरी चूत अब लोहाणे के एकदम सामने थी। मैंने रोहिणी के नीचे पड़े–पड़े उसके मम्मों को चाटना शुरु कर दिया और लोहाणे ने मेरी चूत को। पुरा कमरा सिस्कारियों से भर उठा। तेज आवाज के म्युज़िक के बीच भी हम चारों की सिस्करियां अच्छी तरह से सुनायी पड़ रही थीं।

रोहिणी ने मेरे उपर से उठ कर लोहाणे को जमीन पर लेटा दिया और चढ़ गयी उसके लंड पर। लंड झटके से उसकी रसभरी चूत में घुस पड़ा। फिर वह उछल-उछल कर धक्के मारने लगी। लोहाणे अपने दोनों हाथों से उसके मम्मों को दबोच रहा था, सहला रहा था, उसके निपलों को पिंच कर रहा था। इधर बॉस मुझे जमीन पर लेटे देख कर मेरी चुतड़ को अपने हाथ से उठाया और अपना लंड मेरी झांघों में फंसा दिया और मेरी चूत का निशाना लगा कर अपना लंड मेरी चूत में घुसा दिया। दो-तीन धक्को में उसका पूरा लंड मेरी चूत के अंदर था। अब अपने चुतड़ उठा कर मेरी चूत को रोंदने लगा। मेरे मुंह से आह..आह निकलने लगी।

अब थोड़ी थोड़ी देर हम चारों पोजिशन बदल-बदल कर चुदाई रहे थे। कभी लोहाणे का लंड मेरी चूत में होता तो कभी बॉस का लंड। इसी तरह रोहिणी का हाल था। लोहाणे चोदने में पुरा एक्स्पर्ट था। उसका लंड भी मजबुती से हम दोनों की चूत को मज़ा दे रहा था। बॉस भी कमजोर नही था लेकिन लोहाणे से थोड़ा कम ही था। लोहाणे ने अपने लंड को कभी भी खाली बैठने नही दिया। हम दोनों की चूत को चोदने के अलावा हमारे मुंह का उपयोग भी बड़े शानदार तरिके से कर रहा था। अपने लंड को कभी हमारी चूत में तो कभी हमारे मुंह में दे कर अपने लंड का बराबर उपयोग कर रहा था। चारों ने रात भर इस चुदाइ के खेल को जारी रखते हुए खुब मज़ा लिया।

सुबह तक हम चारों की हालत ढीली हो चुकी थी। लेकिन कम्पनी का कान्ट्रैक्ट पक्का हो चुका था। लोहाणे भी खुश और बॉस भी खुशा। इधर मैं भी खुश। तीन महिने बाद मुझे १० लाख मिले जिसमे से मैंने ५ लाख रोहिणी को दे दिये।

||||| समाप्त ||||